Rohtas Mahila college, Sasaram, 02-07-21
Dr. Aman Murmu, Dept of psychology, B.A part I H, Pr-I

(Topic- जैविक तथा सामाजिक प्रेरकों में अंतर) —

(i) जैविक प्रेरक जैसे- भूख, प्यास इत्यादि जन्मजात होते हैं। जन्म से ही ये बच्चों में उपस्थित रहते हैं। दूसरी ओर सामाजिक प्रेरक अर्जित होते हैं। उपलब्धि आवश्यकता, सम्बन्धन आवश्यकता आदि बच्चे अपने वातावरण से सीखते हैं। वे बच्चों में जन्म के समय उपस्थित नहीं रहते हैं। इसलिए जैविक प्रेरकों को जन्मजात प्रेरक तथा सामाजिक प्रेरकों को अर्जित प्रेरक भी कहते हैं।

(ii) जैविक प्रेरक प्राणी के जीवन अथवा वर्ग जाति को कायम रखने के लिए आवश्यक हैं। भूख तथा प्यास की संतुष्टि के बिना प्राणी जीवित नहीं रह सकता है। इसी तरह मातृक आवश्यकता (maternal need) तथा यौन आवश्यकता की संतुष्टि के बिना वर्ग जाति का जारी रहना संभव नहीं है। दूसरी ओर सामाजिक प्रेरक न तो प्राणी के जीवन को कायम रखने के लिए और न वर्ग जाति को जारी रखने के लिए आवश्यक है।

(iii) जैविक प्रेरकों का आधार शारीरिक है। भूख, प्यास, यौन आदि शारीरिक आधार वाले प्रेरक हैं। इसीलिए इन्हें शारीरिक प्रेरक भी कहा जाता है। दूसरी ओर सामाजिक प्रेरक के किसी शारीरिक आधार का पता नहीं मिलता है। इन प्रेरकों का मनोवैज्ञानिक आधार होता है। इसलिए ऐसे प्रेरकों को मनोवैज्ञानिक प्रेरक भी कहा जाता है।

(iv) जैविक प्रेरकों पर मूलतः वातावरण या शिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है। प्रेरकों की संतुष्टि के ढंग पर वातावरण, शिक्षण या संस्कृति का प्रभाव पड़ सकता है। कोई हाथ से भोजन करता है तो कोई चम्मच और काँटे से, कोई जमीन पर बैठकर खाता है और कोई टेबल कुर्सी पर। कोई साग-सब्जी पसंद करते हैं तो कोई मांस मछली। परन्तु सभी व्यक्ति अपनी भूख की संतुष्टि समान रूप से करते हैं। दूसरी ओर सामाजिक प्रेरकों पर वातावरण (Environment) शिक्षण तथा संस्कृति का ही प्रभाव पड़ता है। इसीलिए, भिन्न भिन्न समाजों तथा संस्कृत

एवं संस्कृतियों के लोगों में सामाजिक प्रेरकों की मात्रा भिन्न भिन्न हुआ करती है।

(v) जैविक प्रेरकों के कारण व्यवहार में समानता उत्पन्न होती है। संसार के सभी व्यक्तियों के भूख, प्यास, यौन तथा निद्रा सम्बन्धी ~~अनेक~~ व्यवहारों में बहुत अंशों तक समानता पाई जाती है। भारत में भिन्न भिन्न संस्कृति के लोग रहते हैं यदि हम उनके व्यवहारों का निरीक्षण करें तो हम देखेंगे कि वे अनेक (एक ही तरह से भूख, प्यास, यौन आदि जैविक आवश्यकताओं की संतुष्टि करते हैं। दूसरी ओर सामाजिक सामाजिक प्रेरकों से ऐसे व्यवहारों में भिन्नता उत्पन्न होती है। यह सही है कि उपलब्धि आवश्यकता या सम्बन्धन आवश्यकता, सभी व्यक्तियों में पाई जाती है, मगर उनकी मात्रा में भिन्नता होने के कारण व्यक्ति के व्यवहारों में भी भिन्नता उत्पन्न हो जाती है।

(vi) जैविक प्रेरकों की प्रबलता अपेक्षाकृत अधिक होती है कारण यह है कि भूख, प्यास आदि बुनियादी आवश्यकताएँ हैं, जबकि सामाजिक प्रेरक बुनियादी प्रेरक नहीं हैं। ~~आवश्य~~ आवश्यकताएँ नहीं हैं। इसके बिना भी जीवन का खेल जारी रह सकता है। मगर बुनियादी आवश्यकता के बिना जीवन का खेल ही समाप्त हो जाएगा।

Scanned with CamScanner